कृषि अन्वेषिका

ANVESHIKA
PUBLISHING & INFORMATICS

POPULAR ARTICLE

ग्रीष्म कालीन तथा वर्षा कालीन भिंडी की उन्नतशील खेती

सर्वेश कुमार * नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

अरुण कुमार पाल चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।

Article History:

Received: 12-12-2023

Accepted: 07-01-2024

कुंजी शब्द :

ग्रीष्म कालीन

भिंडी

उन्नतशील

पौष्टिक सब्जी

बिटामिन सी

अनुरूपी लेखक :

सर्वेश कुमार

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

image source :-
https://www.meesho.com/hybrid-outdoor-garden-ladyfingerbhindiokra-plant-seeds-50-beej-146/p/4gxj0j

परिचय

ग्रीष्म कालीन तथा वर्षा कालीन में सब्जियों में भिंडी का प्रमुख स्थान है। इसका प्रयोग हरी सब्जी के रूप में किया जाता है। यह पौष्टिक सब्जी है जिसमें ए बी और बिटामिन सी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है तथा इसका उपयोग औषधियों के रूप में भी किया जाता है। इसके सूखे फल व तने में रेशा पाया जाता है जिसका उपयोग कागज बनाने में किया जाता है। निर्यात की जाने वाली ताजी सब्जियों में भिंडी का प्रमुख स्थान है। भिंडी की अच्छी पैदावार के लिए उन्नतशील प्रजातियों की जानकारी होना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु में उगाई जाने वाली कुछ उन्नतशील प्रजातियाँ निम्नवत हैं.

बी आर ओ 6 .

यह प्रजाति भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान वाराणसी से 2003 में विकसित की गयी थी। इस प्रजाति को काशी प्रगति के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रजाति में लगभग 40 दिनों में फल निकलना शुरू हो जाता है। इसकी उपज गर्मियों में 130-140 कुण्टल/है0 तथा वर्षा ऋतु में 170-180 कुण्टल/है0 प्राप्त की जा सकती है।

बी आर ओ 22 .

यह प्रजाति भी भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान से विकसित की गयी है। इसकी पैदावार वर्षा ऋतु में 150-160 कुण्टल/है0 तथा गर्मियों में 130-140 कुण्टल/है0 प्राप्त की जा सकती है।

आर्का अनामिका .

यह प्रजाति पीत शिरा मोजैक विषाधु रोग प्रतिरोधी है। इसकी उपज वर्षा ऋतु में 120-130 कुण्टल/है0 प्राप्त की जा सकती है।

आर्का अभय .

यह किस्म आई आई एच आर बैंग्लोर से विकसित की गयी है। इसकी उपज वर्षा ऋतु में 110-120 कुण्टल/है0 प्राप्त की जा सकती है।

हिसार उन्नत .

यह किस्म चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से विकसित की गयी है। इस किस्म में पहली तोड़ाई 40-45 दिनों में शुरू हो जाती है तथा इसकी उपज गर्मियों तथा बरसात में 120-130 कुण्टल/है0 प्राप्त की जा सकती है।

परभिनी क्रांति

यह किस्म हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से विकसित की गयी है। इसकी उपज गर्मियों तथा बरसात में 120-130 कुण्टल/है0 प्राप्त की जा सकती है।

पूसा मखमली

इस किस्म के फल हल्के हरे रंग के होते हैं। इस किस्म में बीमारी अधिक लगती है।

पंजाब पदमिनी

यह किस्म हरे रंग की होती है तथा लम्बे समय तक फ्रेश रहती है जो बुवाई के 50-60 दिन बाद तैयार हो जाती है।

जलवायु

यह ऊष्ण तथा उपोष्ण जलवायु की फसल है। अच्छी उपज के लिए आर्द्र जलवायु उपयुक्त मानी जाती है। अच्छी पैदावार के लिए 20-25 सेंटीग्रेट तापमान उपयुक्त माना जाता है।

भूमि व खेती की तैयारी

भिंडी की खेती लगभग सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती हैए परन्तु जीवांश युक्त दोमट व बलुई दोमट भूमि उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती के लिए समुचित जल निकास का प्रबन्ध होना चाहिए क्योंकि इसकी जड़े पानी के प्रति असहनशील होती है।

बुवाई का समय

भारत के मैदानी भागों में जायद की फसल फरवरी , मार्च तथा पूर्वी भारत में इसकी बुवाई का समय जनवरी से फरवरी तक है। भिंडी की बुवाई का उचित समय पूरे देश में जून से जुलाई तक ही उपयुक्त माना गया है।

बीज और बीजोउपचार

ग्रीष्म कालीन फसल के लिए 18-20 कि0ग्रा0 बीज तथा वर्षा ऋतु के लिए 10-12 कि0ग्रा0 बीज/है0 उपयुक्त माना जाता है। बुवाई से पहले बीज को 3 ग्राम थायरम फंफूद नाशक दवा से प्रति किलो बीज की दर से उपचार करना चाहिए।

बुवाई की विधि

भिंडी के फसल की बुवाई समतल तथा मेड़ों दोनों प्रकार से की जा सकती है। अगर अच्छे जल निकास की व्यवस्था है तो समतल भूमि पर और यदि अच्छे जल निकास की व्यवस्था नहीं है तो मेड़ों पर बुवाई की जाती है।

दूरी

भिंडी की फसल के लिए ग्रीष्म कालीन ऋतु में लाइन से लाइन की दूरी 30 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दूरी 15 सेंटीमीटर तथा वर्षा ऋतु में लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दूरी 15 सेंटीमीटर उचित रहती है।

खाद तथा उर्वरक.

भिंडी की अच्छी उपज के लिए 20 से 25 टन गोबर की अच्छी खाद बुवाई से पहले मिट्टी में मिला देनी चाहिए तथा 100 किग्रा0 नाइट्रोजन 60 किग्रा0 फास्फोरस तथा 50 किग्रा0 पोटास प्रति हैक्टेयर देनी चाहिए। नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा तथा फास्फोरस व पोटास की पूरी मात्रा भूमि की तैयारी करते समय भूमि में मिला देनी चाहिए। शेष बचे नाइट्रोजन की मात्रा को फसल की बुवाई के बाद खड़ी फसल में 4-5 बार में देनी चाहिए।

सिंचाई

भिंडी की बुवाई के बाद यदि भूमि में नमी की कमी है तो बुवाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए तथा ग्रीष्म ऋतु में 5-6 दिन के अन्तराल पे सिंचाई करते रहना चाहिए तथा वर्षा ऋतु में आवश्यकतानुसार करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

खेत से अनावश्यक खरपतवार को 2 से 3 बार निकाई गुड़ाई करके निकाल देना चाहिए तथा बुवाई के तुरन्त बाद पेंडामेथलीन का 1.25 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव कर देना चाहिए।

फल की तुड़ाई

भिंडी की फसल में लगभग 40-50 दिनो में फूल आने प्रारम्भ हो जाते हैं। पौधों में फूल आने के बाद लगभग 5 से 7 दिनों बाद फल की तुड़ाई कर लेनी चाहिए। भिंडी की फसल में प्रथम फल की तुड़ाई के बाद 3 से 4 दिन के अन्तराल पर फलों की तुड़ाई करते रहना चाहिए। यदि फलों की जल्दी तुड़ाई नहीं की गयी तो उपज पर बुरा असर पड़ता है।

उपज

ग्रीष्म ऋतु में फसल की उपज लगभग 80-120 कुण्टल प्रति हैक्टेयर तथा बरसात में 110-120 कुण्टल प्रति हैक्टेयर उपज आसानी से मिल जाती है।

कीट व कीट नियन्त्रण:—

भिंडी का तना छेदक

यह कीट पौधों की जड़ों में प्रवेश करके पौधों की जड़ों को खोखला कर देता है। इसके उपचार के लिए फिप्रोनिल का 1 मि0ली0/लीटर की दर से छिड़काव कर देना चाहिए।

जेसिड

यह हरे रंग का कीट होता है। जो पौधों की पत्तियों का रस चूंसता है जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती है और मुड़ जाती है। इसके उपचार के लिए ट्रायजोफास 40 ई सी 2 मि0ली0 प्रति लीटर की दर से छिड़काव कर देना चाहिए।

रोग व रोग नियन्त्रण :—

पीत सिरा मोजैक

यह भिंडी की फसल का सबसे भयंकर रोग है जोकि विषाणु के द्वारा फैलता है। इसके रोग से पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा फल कठोर व बेडौल हो जाते हैं।

नियन्त्रण

रोगी पौधों को उखाड़ कर अलग कर देना चाहिए तथा उसे जला देना चाहिए।
रोग रोधी किस्म का चयन करना चाहिए।
फसल पर एसिफेट 0.15 या एमिडा क्लोप्रिड 0.3 का छिड़काव करना चाहिए।

फफूंद रोग

इस रोग के लगने पर पौधों की पत्तियों पर भूरे रंग का पाउडर बन जाता है तथा पत्तियां सिकुड़ कर सूख जाती हैं।

नियन्त्रण

उपचार के लिए बॉस्टिन 0.1 प्रतिशत का छिड़काव कर देना चाहिए।

पाउडर मिलदेउ रोग.

इस रोग के लगने पर पौधों की पत्तियों के निचले सतह पर सफेद रंग का पाउडर बन जाता है तथा पत्तियां सूख जाती हैं।

नियन्त्रण

इसके उपचार के लिए 25 किग्रा0 प्रति हैक्टेअर की दर से गन्धक पाउडर का बुरकाव करें।
हेक्साकोनोजोल 0.05 प्रतिशत या प्रोपिकोनजोल 0.023 प्रतिशत का 2 से 3 बार में में 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।